केवल निजी वितरण के लिए

ECHOES

श्री राम चंद्र मिशन®

दिसम्बर २०१४ स्मरणिका विशेषांक

श्री पार्थसारथी राजगोपालाचारी

२४ जुलाई १९२७ – २० दिसम्बर २०१४

अनेक भव्यताओं का युग

"मैं बार–बार आपको दोहराता हूँ कि मैंने अपने जीवन में कभी भी स्वयं को गुरु नहीं समझा। यदि मैंने ऐसा समझा होता तो मैं अनुपयोगी होता, मैं गुरु का कार्य करने के लिये बिलकुल अयोग्य होता। मैं अपने बाबूजी महाराज का शिष्य हूँ, मैं उनका कार्य उनके कार्यानुसार और उनके निर्देश के अनुसार कर रहा हूँ, चाहे ये निर्देश उन्होंने अपने जीवनकाल में दिये या फ़िर उसके बाद।

.... मुझे अपने पूज्य गुरुदेव से निरन्तर सन्देश प्राप्त हो रहे हैं; वे कहते हैं, "तुम्हारा मेरे पास आने का समय अभी नहीं आया है क्योंकि अभी तुम्हें वहाँ काम करना है। परन्तु जब तुम यहाँ आओगे तो तुम्हारी शानदार अगवानी की जायेगी और फ़िर हम दूसरे लोक को चले जायेंगे ...।" और मैं ...मैं नहीं जानता कि मुझे खुश होना चाहिये या उदास! अन्त कहीं नहीं है। यदि कार्य समाप्त हो जाये तो फ़िर जीवन भी नहीं है, चाहे देह में रहते हुए हो अथवा देह छूटने के बाद। "

विश्वभर में सीधा प्रसारण, २६ अक्टूबर २०१४, चेन्नई, भारत

आदरणीय कमलेश डी. पटेल जी का संदेश

हम में से हर एक को जो सदमा लगा है और जिससे हम अब भी गुजर रहे हैं, उसको शब्दों में व्यक्त करना बहुत कठिन है । सांत्वना के कोई भी शब्द उसके लिये कभी भी पर्याप्त नहीं हो सकते । हमारे गुरुदेव ने – एक अभ्यासी, एक प्रशिक्षक एवं एक गुरु के रूप में अपने जीवन के हर क्षण अथक सेवा करते हुए मिशन में पचास वर्ष पूरे किये ।

उनका जीवन सही मायनों में एक सच्चे कर्मयोगी का उदाहरण था । उनका जीवन प्रत्येक स्तर पर कष्ट एवं तकलीफ़ों से भरा हुआ था । उनके जीवन में एक क्षण के लिये भी शान्ति नहीं रही; एक क्षण के लिये भी नहीं । उनकी शान्ति किसी न किसी कारण से भंग रहती थी । वे यही चाहते थे कि वे हम सबके बीच सामंजस्य देख सकें ।

सामंजस्य । बड़े दु:ख की बात है कि हम में और हमारे बीच में सामंजस्य नहीं है । कम से कम अब तो हमें गुरुदेव से वादा करना चाहिये कि हमारे बीच अब कोई और मतभेद नहीं होंगे । मतभेद होना उचित है पर वह उस स्तर तक नहीं बढ़ने चाहिये कि उसके कारण हमारे बीच एक दूसरे के प्रति घृणा एवं द्वेष का भाव हो । यह याद रहे कि हम भाई बहिन हैं ।

हमें केवल नाम और प्रसिद्धि के लिये ही प्रयास नहीं करने चाहिये । सहज मार्ग चुपचाप और गुमनाम रहकर काम करने की पद्धति है, लेकिन इसमें एक सामूहिक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये हमेशा कार्य करना होता है । बाबूजी महाराज दिव्यलोक से भेजे सन्दशों में बार–बार कहते रहे हैं कि हमारा मिशन मान्यता प्राप्त करेगा और भविष्य में अपनी एकता के लिये जाना जायेगा । इसकी शुरुवात हमसे ही होती है ।

अपने हृदय के अन्तर्तम स्तर पर दिव्यता की उपस्थिति का अनुभव करना कितना भव्य होता है तथा इसकी भव्यता और बढ़ जाती है, जब इसी दिव्यता की उपस्थिति हमारे आचरण और कार्यों में परिलक्षित होती है ।

हमें एक अभ्यासी, एक भक्त, एक प्रेमी, एक शिष्य, एक कार्यकर्ता, एक स्वयंसेवक, एक प्रेम एवं कृपा के वाहक के रूप में, एक बेहतरीन विश्व के स्वप्नदृष्टा के रूप में, उनकी सेवा और प्रेम पाने वाले गौरवान्वित लाभार्थी के रूप में एक वादा करना है । यह उनका स्वप्न था कि वे हम सभी को, हम में मौलिक परिवर्तन के जीवन लक्ष्य के साथ, संगठित एवं परस्पर बढ़ते हुए, देखना चाहते थे तथा इस प्रक्रिया में हमारे भविष्य में आवश्यक परिवर्तन हेतु दैवीय कार्य में सहयोग करना चाहते थे ।

आइये हम अपने प्रिय मालिक से वादा करें । हम संकल्प करें कि हम उन्हें प्रसन्न रखेंगे और हृदय से उनके मिशन को पूरा करने के लिये लगे रहेंगे । आइये हम अपने प्रिय गुरुदेव को गुरुदक्षिणा के रूप में वचन दें कि हम एक बेहतर अभ्यासी, एक बेहतर भक्त, एक बेहतर प्रेमी, एक बेहतर शिष्य एवं एक बेहतर स्वयं सेवक बनेंगे और इस बेहतर होने की प्रक्रिया को निरन्तर आगे बढ़ाते जायेंगे ।

भविष्य की ओर इशारा

२० दिसम्बर २०१४ की रात्रि जब मैंने एक लम्बी और दर्द भरी बीमारी के बाद गुरुदेव की महासमाधि का दु:खद समाचार सुना तो मैंने मणपाक्कम आश्रम की ओर प्रस्थान किया । जब मैंने आश्रम में प्रवेश किया तो मैंने वहाँ के वातावरण में स्थिरता और शान्ति का अनुभव किया । जो अभ्यासी वहाँ पहुँच चुके थे वे शान्त थे और ऐसा प्रतीत होता था कि उन्होंने गुरुदेव के इस संसार से चले जाने की वास्तविकता के आगे समर्पण कर दिया था । आगामी दो दिनों में पूरे भारत से लगभग २५००० और काफी संख्या में विदेशों से अभ्यासी मणपाक्कम आश्रम पहुँच चुके थे । सभी अभ्यासी गुरुदेव के पार्थिव शरीर, जिसको उनके शयन कक्ष के बाहर वाले हाल में रखा गया था, की एक झलक पाना चाहते थे । दु:ख में डूबे हुए अश्रुपूर्ण नेत्र लिए अभ्यासी शान्ति से चल रहे थे। वहाँ गुरुदेव के पूर्व निर्देशानुसार आदि शंकराचार्यका गुरुपादुका स्तोत्रम (गुरुपादुकाओं की वंदना) भजन बजाया जा रहा था । भजन के पहले श्लोक का भावार्थ कुछ इस प्रकार है:

गुरु की सच्ची भक्ति रूपी नाव ने
संस्कारों के इस अथाह सागर को पार करना संभव बना दिया,
मुझे त्याग की अमूल्य महिमा का मार्ग दिखा दिया,
हे प्रिय गुरुदेव, मैं आपके पवित्र पादुकाओं को नमन करता हूँ ।

२२ दिसम्बर की दोपहर के बाद हमारे प्रिय गुरुदेव के पार्थिव शरीर को बसन्त नगर शवदाहगृह में अग्नि के सुपुर्द कर दिया गया । इस प्रकार इस धरती पर गुरुदेव के जीवन की एक महान गाथा का अन्त हो गया, जो कि हमारे जीवन में एक बड़ा खालीपन छोड़ गया।

हमारे लिये उनकी शिक्षायें

अपने जीवन और अपनी विदाई के द्वारा गुरुदेव ने हमें कई शिक्षायें दीं – मनुष्य जीवन की नश्वरता को स्वीकारना, उपलब्ध बहुमूल्य समय का सदुपयोग आध्यात्मिक विकास के लिये करना तथा ईश्वरीय याद में सेवा को समर्पित जीवन जीते हुवे ऊँचे से ऊँचा उठते जाना । सर्वोपरि, मानव जीवन अपने साथ जो कुछ भी लेकर आये उसे बिना किसी आपत्ति और अपेक्षा के स्वीकारना । वे स्वयं इन सभी शिक्षाओं के प्रतीक थे और इसीलिये हमारे आदर्श और लक्ष्य बने ।

महान गुरुदेव के चले जाने से उनके भक्तों को निश्चित ही एक बड़ा सदमा पहुँचा है और उनके आन्तरिक संसार में एक बड़ी रिक्तता पैदा हो गयी है । फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि तीन दशकों से हमारे प्रिय गुरुदेव, चारीजी महाराज ने अपने भौतिक प्रस्थान से उत्पन्न स्थिति को सहने के लिये अभ्यासियों के हृदयों को पहले से ही तैयार कर दिया था। पिछले दो सालों में जब उनके शारीरिक कष्ट चरम सीमा तक पहुँच गये थे और वे अनेक बार जाने के कगार पर होते प्रतीत हो रहे थे, उन्होंने दोबारा स्वास्थ्य प्राप्त किया और अपने गुरु की आज्ञापालन में अपने कार्य में जुट गये । ऐसे अवसरों पर वे कहते थे, "मैं ऊपर दरवाज़े तक गया परन्तु वह खुला नहीं और मुझे वापस जाने के लिये कहा गया, क्योंकि मेरा कार्य अभी पूरा नहीं हुआ था ।" कुछ महीनों पहले जब हम गुरुदेव की कॉटेज़ के बाहर बरामदे में बैठे थे, उन्होंने कहा, "क्योंकि मैंने अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया है, इसका अर्थ यह नहीं है कि मैं जा सकता हूँ । मैं केवल तभी जा सकता हूँ जब कि वह पूरी तरह से तैयार हो जाये ।"

कष्ट और पीड़ायें – उनके आरोहण के लिये सीढ़ियाँ

पिछले एक वर्ष में, जब कैन्सर की बीमारी ने उन्हें आ घेरा था और उनकी शारीरिक शक्ति को निचोड़ लिया था, तब भी गुरुदेव अपना कार्य जारी रखने के लिये संघर्ष कर रहे थे । अक्सर वे दर्द, बुखार, संक्रमण और अपने आहार में लगातार हो रही कमी के कारण बिस्तर पर ही लेटे रहते थे । किन्तु ऐसी स्थिति में भी वे व्हील चेयर पर अपने शयन कक्ष से बाहर ले जाने के लिये कहते थे जिससे कि उनके दरवाज़े पर धैर्य से प्रतीक्षा कर रहे अभ्यासियों को वे दर्शन दे सकें । परन्तु इस हालत में भी उन्होंने अपना विनोदी स्वभाव नहीं छोड़ा । काफी लम्बे समय तक बिस्तर में ही रहने के बाद एक दिन जब उन्हें व्हील चेयर पर बैठाया गया तो वे भाई कमलेश से बोले, "अब मैं चेयरमैन बन गया हूँ!"

ऐसा है एक गुरु का उत्साह जो कि बढ़ती उम्र का बहादुरी से सामना करता है, अपने अभ्यासियों में आशा और विश्वास जगाता है और उन्हें जीवन की कठिनाइयों से जूझने के लिये मजबूत बनाता है । उनके लिये दर्द महानता के शिखर तक पहुँचने की सीढ़ी है । उन्होंने यह भी कहा कि गुरु का दर्द

अभ्यासियों के प्यार को उनकी ओर आकर्षित करता है ।

चैतन्य जीवन के उनके अन्तिम दिनों में मैं उनकी तीव्रता से बढ़ती हुयी पीड़ा के बारे में अपनी घोर चिंता को उनके साथ बाँटने के लिये उद्यत था । मैंने उनसे कहा कि जब उन्हें दर्द होता है तो उनके बच्चे होने के कारण हमें भी पीड़ा होती है । गुरुदेव ने कहा, "यह सत्य नहीं है । बच्चे केवल कभी–कभी परेशान होते हैं, माता–पिता तो हमेशा ही पीड़ा भोगते हैं ।"

हाल ही में, जब वे शैय्याग्रस्त थे, एक वार्तालाप के दौरान गुरुदेव ने उल्लेख किया कि एक भाई एक जानी–मानी कम्पनी में भागीदार था और मैंने कहा. "हम केवल आपके साथ भागीदार बन सकते हैं, परन्तु आपके दर्द में नहीं ।" गुरुदेव ने उत्तर दिया, "यह सम्भव नहीं है। जैसा कि बाबूजी व्हिस्पर्स में कहते हैं, 'यह ऐसे ही होता है!'" जब मैंने टिप्पणी की कि वे किसी औसत मानव से कहीं ज्यादा पीड़ा भोग चुके हैं तो वे बोले, "यह सत्य है, यह तभी शुरु हो गया था जब मैं एक किशोर था ।"

ऐसा प्रतीत होता है कि गुरुजनों के दुःख–दर्द किसी बहुत बड़े उद्देश्य के लिये होते हैं । बाबूजी महाराज १० दिसम्बर २०१४ के अपने व्हिस्पर्स संदेश में कहते हैं कि चारीजी के हाल के कष्टों में यह 'अन्तिम कदम' उनको मानवीय जीवन के विकास की उच्चतम अवस्था को प्राप्त करने के लिये आवश्यक था । मुझे याद है कि १९८५ में गुरुदेव ने मुझे बताया था कि नाड़ी शास्त्र (ताड की पत्तियों पर अंकित भविष्यवाणी का विज्ञान) के अनुसार वे उन आध्यात्मिक ऊँचाईयों को प्राप्त करेंगे जो अब तक किसी मनुष्य ने प्राप्त नहीं की हैं ।

गुरुदेव से प्राप्त दिलासापूर्ण संदेश

अपने जाने के चौबीस घंटों के भीतर ही गुरुदेव ने दिव्य लोक से यह कहते हुये संदेश भेजा कि उनके सभी कष्टों का अन्त हो गया है । हजारों की संख्या में बाबूजी मेमोरियल आश्रम, मणपाक्कम पहुँचे हुये अभ्यासियों में से कुछ से बात करते हुये मैंने पाया कि, वे भी चिन्तामुक्त अनुभव कर रहे थे कि अन्ततया गुरुदेव के कष्टों का अन्त हो गया है । यद्यपि गुरुदेव के प्रस्थान से उन सभी की आँखें अश्रुओं से भरी हुई थीं लेकिन उन्हें इसकी शिकायत नहीं थी। यह स्वीकार्यता का मनोभाव गुरुदेव ने अपनी लम्बी और कष्टदायक बीमारी के द्वारा उनके अन्दर तैयार कर दिया था ।

गुरुदेव अपने पीछे शिक्षाओं का एक व्यापक संकलन छोड़ गये हैं । उन्होंने लगातार और बार–बार सहज–मार्ग पद्धति को शुद्धता से किये जाने पर, चरित्र–निर्माण पर, सब के लिये प्रेम तथा अभ्यासियों में – विशेषकर कार्यकारिणी सदस्यों में – परस्पर समन्वय, सौहार्द और भाईचारा आदि बातों पर बल दिया है । हमें गुरुदेव के लिये हमारे प्रेम के प्रतीक के रुप में इन चुनौतियों को स्वीकार करना चाहिये और निष्कपटता से उन पर कार्य करना चाहिये ।

वह जो उनका प्रतिनिधित्व करते हैं

गुरुदेव उसी संदेश में चिन्तामुक्त करते हुये कहते हैं, "भविष्य की ओर आत्मविश्वास से देखो।" अभ्यासी अनाथ नहीं हुये हैं । हमें इस जीवन में हमारा मार्ग दर्शन करने के लिये और हमें उस लोक में प्रवेश कराने के लिये, जहाँ महान गुरुजन रहते हैं, गुरुदेव ने अपने प्रतिनिधि को प्रशिक्षित कर दिया है और अपना कार्य जारी रखने के लिये क्षमता प्रदान कर दी है ।

१९८० के दशक में जब गुरुदेव ने बाबूजी का स्थान ग्रहण किया था, तो उन्होंने जिन कठिनाइयों का सामना किया था उसका मैं साक्षी हूँ। गुरुदेव अक्सर स्पष्ट किया करते थे कि जब भी हम मालिक का जिक्र करते हैं तो यह कोई नाम, रूप या गुण नहीं बल्कि उसके पीछे का सत्व होना चाहिये । वर्ष १९८८ में शाहजहाँपुर में बसन्त पंचमी उत्सव के दौरान, जब वे विरोधियों व साथ ही साथ शंकालु हृदयों से घिरे हुये थे, उन्होंने बहुत स्पष्टता से कहा, "आपको बाबूजी महाराज को आश्रम में उनकी समाधि में नहीं देखना चाहिये, बल्कि उस व्यक्ति को देखिये जिसमें उन्होंने जीवित समाधि ली है ।"

यही वह बात है जो उन्होंने अपने पूरे जीवन में हमें सिखायी – गुरु कभी नहीं मरते । वे शाश्वत हैं और सजीव गुरु के रूप में हमारे बीच में रहते हैं ।

ए. पी. दुरई

श्रद्धांजली

श्री पार्थसारथी राजगोपालाचारी जी का जन्म २४ जुलाई १९२७ को चेन्नई के समीप वायालूर में हुआ था। वह चार संतानों में सबसे बड़े थे। पाँच वर्ष की नाजुक आयु में ही उन्होंने अपनी माता को खो दिया था और उनका लालन पालन बहुत प्रेमपूर्वक उनके साहसी पिता ने किया, जिन्होंने बच्चों को कला, क्रीड़ा और सबसे महत्वपूर्ण बुनियादी मूल्य आधारित जीवन से परिपूर्ण समग्र शिक्षा उपलब्ध करायी।

पार्थसारथी जी ने अपनी प्रिय माता के बिछोह का सामना किया तथा एक विशिष्ट युवक के रूप में विकसित हुये। उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से विज्ञान स्नातक की उपाधि प्राप्त की, संगीत सीखा और पुस्तक वाचनके लिये एक स्थायी जुनून विकसित किया। उन्हें पाँच वर्ष की आयु से ही आध्यात्मिक खोज में गहरी रुचि थी एवं पच्चीस वर्ष की आयु प्राप्त होने तक उन्होंने ईसाइयत, हिन्दुत्व, अन्य धर्म, योग व रहस्यवाद में गहरी समझ हासिल कर ली थी।

वर्ष १९५५ में उन्होंने श्रीमती सुलोचना से विवाह किया और उनके पुत्र कृष्णा का जन्म दो वर्षों बाद हुआ। वे सुलोचना, कृष्णा, पुत्रवधू प्रिया और दो पौत्र–पौत्री भार्गव व माधुरी के साथ चेन्नई के अलवरपेट में अपने घर 'गायत्री' में स्नेहमय संयुक्त परिवार में रहते थे। पार्थसारथी जी ने अपना ज्यादातर व्यवसायिक जीवन १९५५ से १९८५ तक टी०टी०के० कम्पनी समूह में व्यतीत किया, जहाँ वे कार्यकारी निदेशक के पद तक पहुँचे।

वर्ष १९६४ में पार्थसारथी जी ने सहज मार्ग पद्धति में आध्यात्मिक साधना शुरु की और अपने गुरु शाहजहाँपुर (उ०प्र०) के श्री रामचन्द्र जी महाराज, जिन्हें प्यार से बाबूजी के नाम से जाना जाता है, से मिले।

इस प्रकार बाबूजी के प्रेमपूर्वक मार्गदर्शन में उनकी आध्यात्मिक

खोज को एक निश्चित दिशा मिली। गहरे उत्साह के साथ आध्यात्मिक खोज में लगने के अलावा, उन्होंने बाबूजी के प्रति निस्वार्थ प्रेम पैदा किया और एक आदर्श शिष्य बने। बाबूजी उन्हें एक ऐसा व्यक्ति, जो पूरब का हृदय व पश्चिम की सोच रखता है, बताते थे। पार्थसारथी जी ने जिज्ञासुओं तक राजयोग की सहजमार्ग पद्धति को पहुँचाने में उनको अथक सहयोग दिया। वे बाबूजी के साथ भारत व विदेशों की यात्रा पर गये और सहज मार्ग उपलब्ध कराने वाली संस्था श्री राम चन्द्र मिशन के सभी कार्यकलापों को सुचारु रुप से चलाने में उनकी सहायता की।

वर्ष १९७० से १९८२ तक उन्होंने मिशन के जनरल सेक्रेटरी (महासचिव) के रूप में सेवा दी और १९७४ में बाबूजी द्वारा उन्हें अपना आध्यात्मिक उत्तराधिकारी व उनके जीवनकाल के बाद श्री राम चन्द्र मिशन का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। बाबूजी ने वर्ष १९८३ में महासमाधि ली और अपनी आध्यात्मिक सम्पदा पार्थसारथी जी को वसीयत में दे दी। इस प्रकार पार्थसारथी जी सहज मार्ग पद्धति के जीवित आध्यात्मिक गुरुओं की शृंखला में तीसरे गुरु बने। तब तक मिशन भारत व विदेशों में अपनी बढ़ती हुई उपस्थिति दर्ज कर चुका था।

१९८३ से, पिछले इकतीस वर्षों से लगातार, चारी जी आध्यात्मिक जिज्ञासुओं का मार्गदर्शन करने व मिशन को विकसित करने के अपने गुरुजी के कार्य को आगे बढ़ाते रहे हैं। यह उनके प्रयास ही हैं जिनके फलस्वरुप आज एक सौ दस देशों में लगभग दो लाख लोग सहज मार्ग का अभ्यास कर रहे हैं। उनके आकर्षक व तेजस्वी व्यक्तित्व, करिश्माई सरलता, बृहत ज्ञान, सच्चाई, देख–रेख व पूर्ण इंसानियत ने सारे विश्व से जिज्ञासुओं को अपने चरणों में खींचा है।

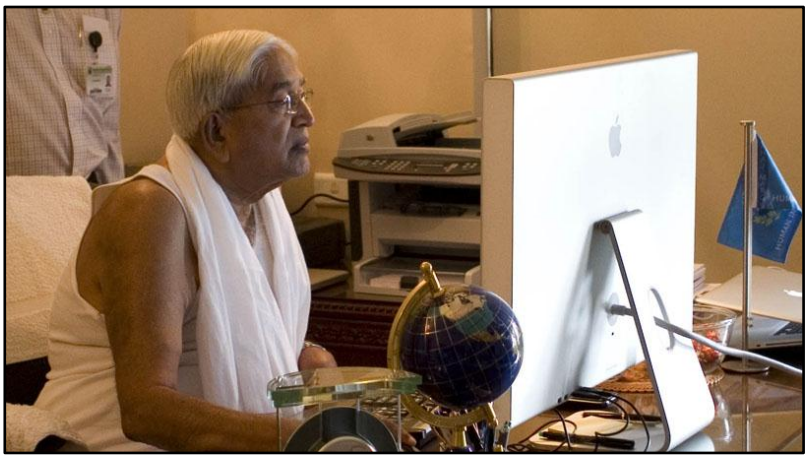

विभिन्न क्षेत्रों में उनकी प्रवीणता उनके आध्यात्मिक जीवन में अभिव्यक्त होती थी । इसीलिए जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के आकांक्षी स्वाभाविक रूप से उनकी ओर आकर्षित होते थे । वास्तविक अर्थ में उन्होंने आधुनिक विश्व में उपनिषदिक काल कोपुनर्स्थापित किया है । उनकी निरन्तर निष्काम सेवा, एकल संकेन्द्रीकरण, अपने गुरु के प्रति समर्पण तथा बिना थके काम करने की असाधारण क्षमता द्वारा प्रदत्त आध्यात्मिक योगदान युगों के इतिहास में सम्भवत: अद्वितीय है । अपने अगाध प्रेम, जो विस्तार में सार्वभौमिक परन्तु प्रकट में इतना अधिक व्यक्तिगत था, द्वारा उन्होंने अनगिनत जिज्ञासुओं को दिशा प्रदान की और उन्हें उच्चतर जीवन के लिये मार्ग दिखाया । उनका हर प्रकार से सम्पूर्ण एवं सन्तुलित अस्तित्व मानवता को सदैव प्रेरणा प्रदान करता रहेगा ।

मिशन में ५० वर्षों की सेवा के बाद २० दिसम्बर २०१४ को उनके चले जाने से हमारे एक युग का अन्त हो गया । जैसा कि उन्होंने बार–बार स्वयं जोर देकर कहा है कि गुरु और शिष्य के बीच का सम्बन्ध शाश्वत है, जो न तो कभी समय बीतने पर कमजोर होता है और न ही जीवन की नश्वरता से विराम लेता है । उनके साथ अपने शाश्वत सम्बन्ध में विश्वास के साथ हम उन्हें इस विश्व से अश्रुपूर्ण विदाई देते हैं ।

उनकी स्थायी मजबूत विरासत में सम्मिलित हैं, उनके प्रेम द्वारा भाईचारे में बँधी हुई आध्यात्मिक जिज्ञासुयों की एक बहुत बड़ी वैश्विक विचारशक्ति, श्री रामचन्द्र मिशन तथा सहज मार्ग स्पिरिचुअल्टी फ़ाउन्डेशन नामक संगठन, १२० से अधिक आश्रम व रिट्रीट केन्द्र जो प्रकाश के केन्द्र के रूप में सेवा कर रहे हैं, अच्छी तरह से कार्यशील स्कूल जो कि आध्यत्मिक वातावरण में उच्चतम स्तर की शिक्षा प्रदान कर रहा है, शिक्षण का ऐसा ढाँचा जो बाबूजी महाराज की शिक्षाओं पर निर्मित है, उनका असाधारण जीवन जो कि मानवता के लिये एक स्थायी उदाहरण रहेगा और सर्वाधिक महत्वपूर्ण उनके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी श्री कमलेश देसाई भाई पटेल जो उनके अमर प्रेम को निरन्तर संचारित करते रहते हैं । एक बार उन्होंने कहा था कि सहज मार्ग में जो प्रेमपाता है, वह प्रेम बन जाता है और उसमें यह जीवन छोड़ने के बाद प्रेम को पीछे छोड़ जाने की सम्भावना होती है ।

उनके परिवार में उनके पुत्र कृष्णा, पुत्रवधू प्रिया, पौत्र भार्गव तथा पौत्री माधुरी हैं एवं उनके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी श्री कमलेश डी० पटेल हैं ।

हम उनके पवित्र चरणों में श्रद्धा व प्रेम सहित, कृतज्ञता पूर्वक साष्टांग प्रणाम करते हैं एवं प्रार्थना करते हे कि उनकी प्रेरणा एवं आन्तरिक उपस्थिति प्रकाश स्रोत के रूप में बनी रहे जो हमें उनके दिव्य स्थल तक वापस पहुँचने में हमारा मार्ग दर्शन करती रहे ।

ओम शान्ति, शान्ति, शान्ति ।

मणपाक्कम में...

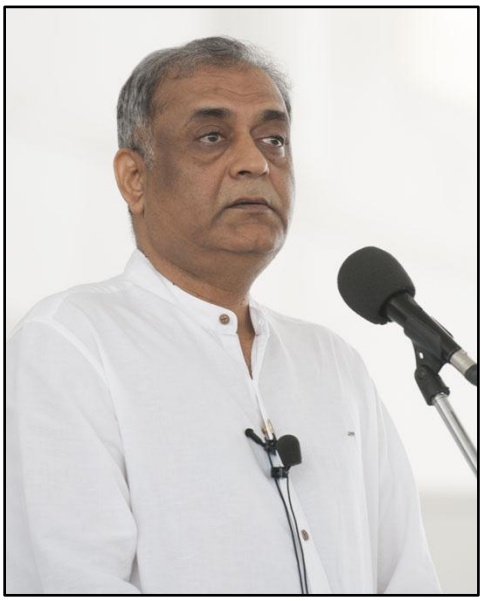

जैसे ही हमारे प्रिय गुरुदेव की महासमाधि का समाचार विश्वभर के केन्द्रों में फैला, अभ्यासियों ने अपने प्रारम्भिक आघात को सहन किया और वे 'उन्हें' जो उनके अस्तित्व का केन्द्र बिन्दु बने रहे थे, अपनी अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित करने सीधे मणपाक्कम की ओर चल पड़े।

हज़ारों अभ्यासियों का ताँता लग गया और वे शान्ति से आश्रम से होकर कॉटेज तक पहुँचती हुई पंक्ति में जा खड़े हुए। वे अपने प्रिय गुरुदेव के पार्थिव शरीर की अन्तिम झलक पाने के लिये आये थे, जो उनके पिता थे, पितामह थे, बन्धु, सखा थे और इन सबसे बढ़कर वे प्रत्येक तड़पते दिलों के लिये एक गुरु थे। वे उनके हृदय द्वार पर दस्तक दे रहे थे। निष्ठावान स्वयंसेवक आश्रम में आये सभी आगन्तुकों की बड़े प्यार से देखभाल करते हुए हर एक को फल और पानी दे रहे थे।

जैसे ही अभ्यासियों ने मास्टर्स कॉटेज में प्रवेश किया, तेजस्वी गुरुदेव का रूप देख कर उनकी आँखों में आँसू भर आये, शोक में गला रुंध गया। जो कभी अपने स्नेहमय स्वर में हमारा स्वागत करते थे, आज अपने अश्रुपूरित प्रियजनों से घिरे हुए मौन थे। जो हर एक का खुली बाँहों से स्वागत करते थे, हमारी विभिन्न स्तरों पर सहायता करते थे, हमसे लाड़-प्यार करते थे, हम पर अपनी करुणा बरसाते रहते थे और हमारे दिलों को उल्लास से भर देते थे; ऐसे अपने प्रिय गुरुदेव के आकर्षक और स्नेहमय व्यक्तित्व को हम फ़िर कभी न देख सकेंगे, यह ख़्याल ही हृदय को चीर देने वाला था।

आश्रम में वातावरण बहुत ही नीरव व प्रशान्त था और प्रकृति भी मानो शीतल वर्षा की बूँदों से शोकाकुल हृदयों को चैन और सान्त्वना देने के लिये मरहम लगा रही थी। सायं ५ बजे कमलेश भाई ने ध्यान कक्ष में एक सिटिंग दी जिससे शोकाकुल हृदयों को काफ़ी शान्ति और सान्त्वना मिली।

अगले दिन सुबह सत्संग के बाद ध्यान कक्ष में दिव्य लोक से प्राप्त गुरुदेव का एक सन्देश पढ़कर सुनाया गया। सभी को गुरुदेव की शाश्वत उपस्थिति की अनुभूति हुई – ऐसी चिरन्तन उपस्थिति जो उनकी समस्त शारीरिक पीड़ाओं से मुक्त थी और जो सबके दुःख को दूर करने के लिये दिव्य कृपा बरसा रही थी। ऐसी उपस्थिति जो हम सभी के हृदयों को शान्ति, बल, प्रेम, कृतज्ञता से भर रही थी तथा गुरुदेव की शिक्षाओं का पालन कर अपने आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त करने व दिव्य गुरुदेव के साथ एक हो जाने के निश्चय से हमारे हृदयों को ओत-प्रोत कर रही थी।

२२ दिसम्बर की शाम गुरुदेव के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी तथा मिशन के अध्यक्ष के रूप में श्री कमलेश डी.पटेल को स्वीकारने हेतु एस०आर०सी०एम० की कार्यकारी समिति की दो बैठकें हुईं।

२३ दिसम्बर की सुबह, मिशन के सचिव भाई यू०एस०बाजपई जी ने कार्यकारी समिति द्वारा पारित प्रस्ताव पढ़कर सुनाये। इसके बाद श्री कमलेश भाई ने हम सभी को एक होकर समन्वय के साथ मिशन की भलाई के लिये काम करने के लिये कहा।

दिव्य लोक से आये सन्देशों ने हमारे शोक-सन्तप्त हृदयों को सान्त्वना दी है और यह जताकर कि 'सब कुछ ठीक है' हमें राहत का अहसास दिलाया है।

गुरुदेव हमारे दिलों में बसते हैं। गुरुदेव उनकी लिखित कृतियों में बसते हैं जो उनकी अपनी परिपूर्णता की चरम सीमा को दर्शाती है। गुरुदेव रिकार्ड की गयी अपनी वार्ताओं एवं वीडियो द्वारा जिनमें उन्होंने आत्मा को उड़ेल दिया है, हमारे बीच विद्यमान हैं। गुरुदेव उन अभ्यासियों के घरों में बसते हैं जो उनके मिशन एवं उनके अभ्यासियों की सेवा करते हैं। गुरुदेव उन सभी आश्रमों में बसते हैं जिन्हें उन्होंने हमारे लिये बनाया है तथा उन सभी हृदयों के लिये, जिनमें आध्यात्मिकता की लालसा है, आने वाले अनेक वर्षों के लिये आवेशित कर दिया है।

हमें किसी भी बात पर निराश होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हमारे प्रिय गुरुदेव ने हमें काफ़ी पहले से ही आश्वासन दे दिया है कि उन्होंने विश्व भर के सभी जिज्ञासुओं की आवश्यकताओं का पूरा ध्यान रखा है, तथा हमारे मिशन और उसके अभ्यासियों को एक ऐसे व्यक्ति को सौंप दिया है जिसे हमारे सभी महान गुरुदेवों द्वारा समस्त आवश्यक योग्यतायें प्रदान की गईं हैं – वे हैं कमलेश भाई। अब हम सब को बस इतना ही करना है कि हम उनके शब्दों का अनुसरण करें और हमारे अपने आध्यत्मिक लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु उनके कार्य में सहयोग करें।

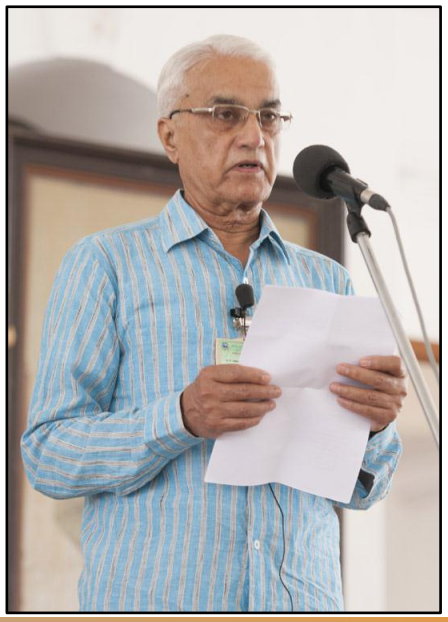

हमारे गुरुदेव के मिशन में पचास वर्ष – एक चित्रमय यात्रा

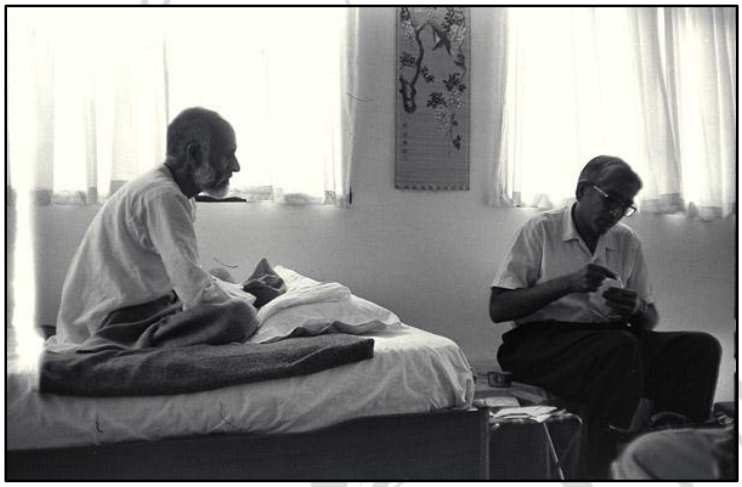

१९७२ रोम

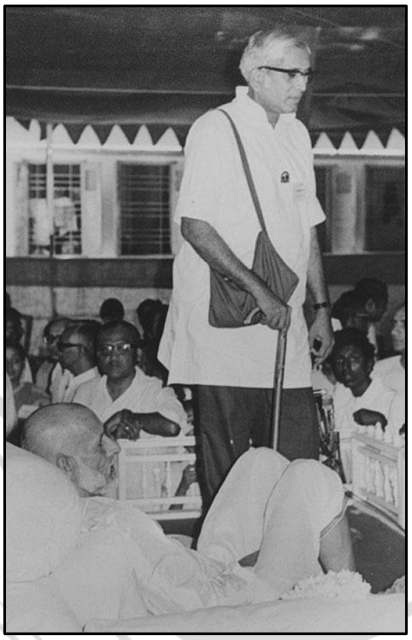

१९७३ चेन्नई

१९८४ चेन्नई

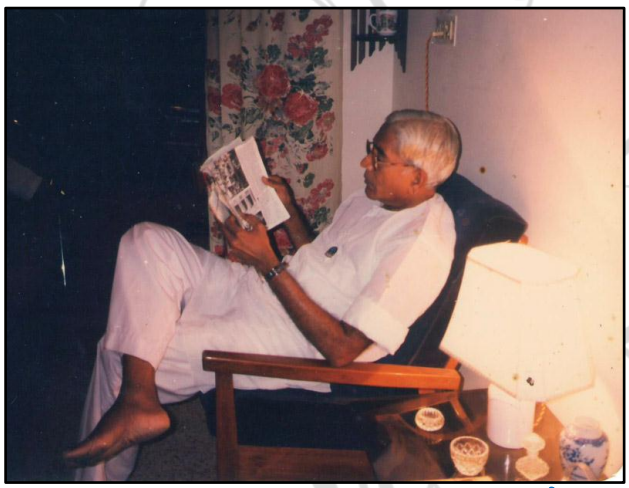

१९८८ नई दिल्ली

१९९० मणपाक्कम, चेन्नई

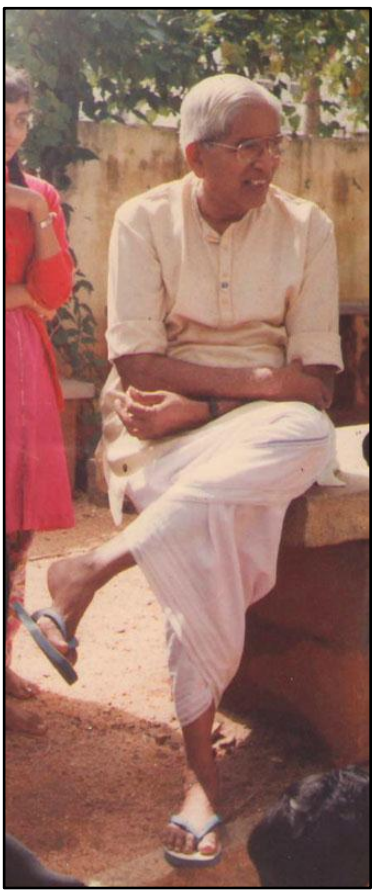

१९९१ बंगलौर

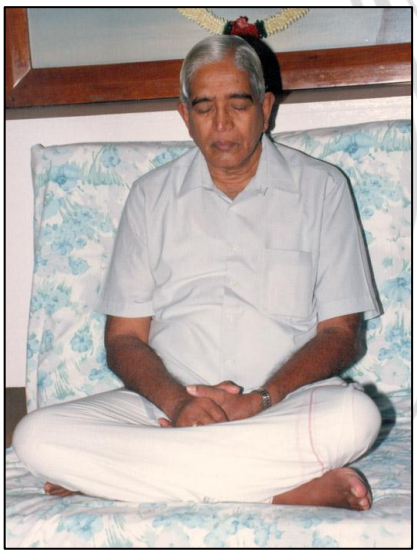

१९८९ बंगलौर

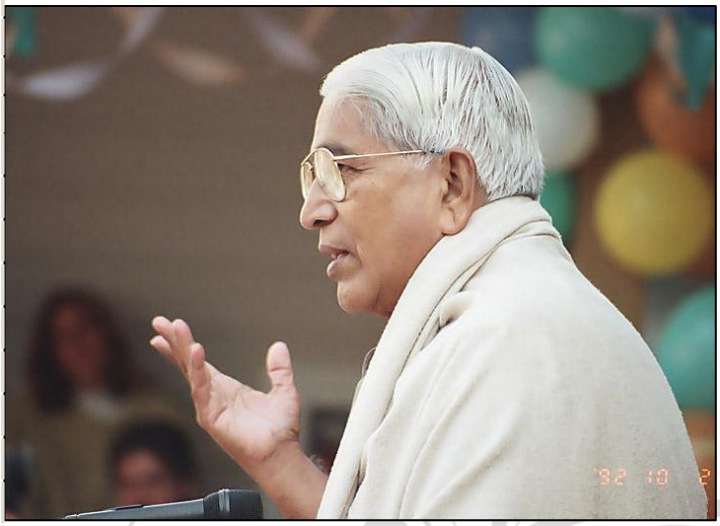

१९९२ – मोलेना, अमरिका

१९९६ – हैदराबाद

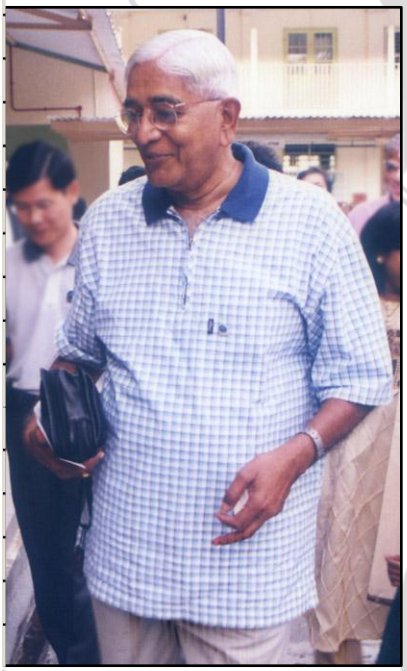

२००० – सिंगापुर

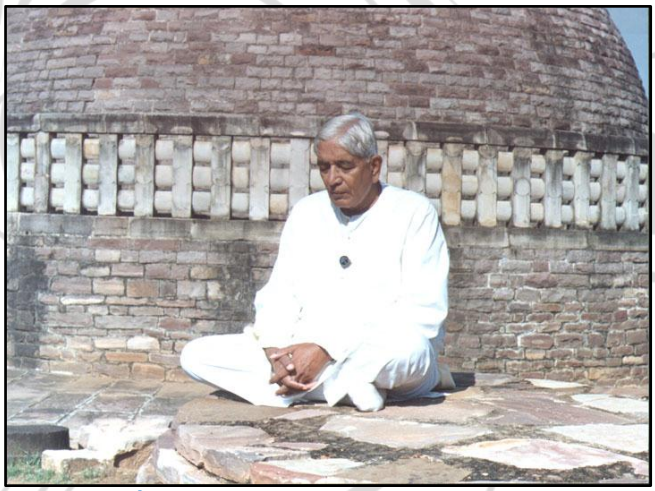

१९९७ – सांची

२००४ – चंडीगढ़

२००३ – स्विट्जरलैण्ड

२००६ – मलेशिया

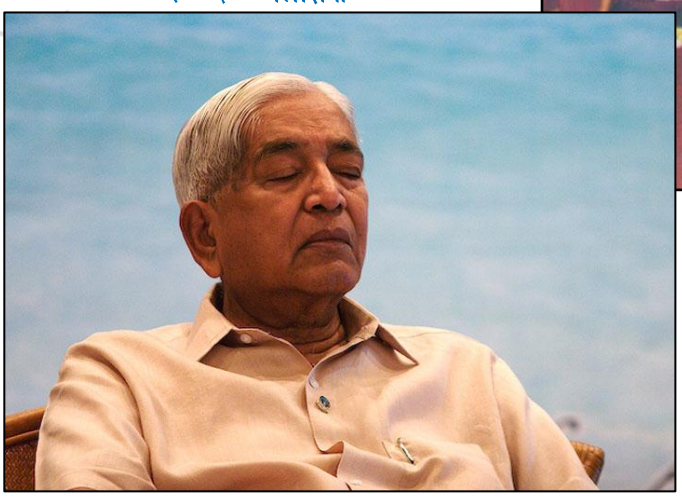

२००७ – क्रेस्ट, बंगलौर

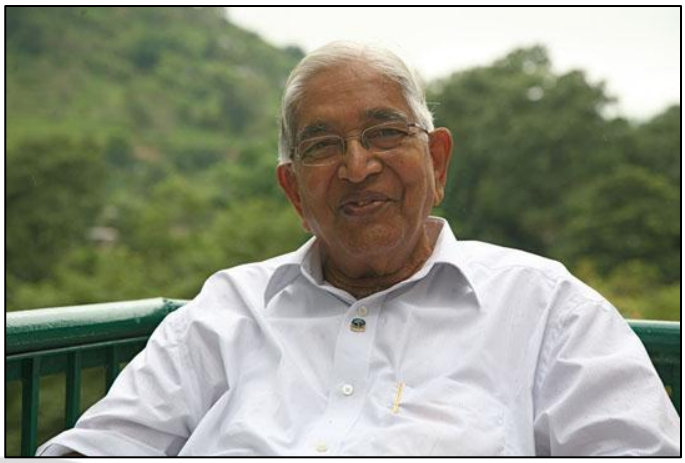

२००८ – नौकुचियाताल

२००९ – चेन्नई

२०१० – चंडीगढ़

२०११ – रुद्रपुर

२०१३ – १५ अगस्त – चेन्नई

२०१४ – चेन्नई